आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-31, अंक-12 दिसम्बर, 2017

इस अंक में

- एच आई वी पर नियंत्रण–एक साझा प्रयास 121
- आई सी एम आर–राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान, पुणे में विश्व एड्स दिवस का आयोजन 124
- कोलकाता में आयोजित "राष्ट्रीय प्रदर्शनी" में आई सी एम आर की भागीदारी 125
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार 127
- आई सी एम आर–राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान, पुणे में विविध कार्यक्रमों का आयोजन 127
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों की भागीदारी 128
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वित्तीय सहायता में सम्पन्न एवं भावी संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन 129

संपादक मंडल

अध्यक्ष	डॉ के. विजयराघवन सचिव, भारत सरकार स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद
उपाध्यक्ष	डॉ संजय एम. मेहेन्दले अपर महानिदेशक
प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग	डॉ नीरज टण्डन
संपादक	डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय
प्रकाशक	श्री जगदीश नारायण माथुर

विश्व एड्स दिवस (1 दिसम्बर,) के अवसर पर विशेष

एच आई वी पर नियंत्रण–एक साझा प्रयास

डॉ विजय नेमा

भारतीय दर्शन के अनुसार जिसकी उत्पत्ति होती है, उसका अन्त निश्चित ही होता है। अन्तर केवल इतना होता है कि कुछ चीजें लम्बी अवधि तक रहती हैं जबकि अन्य की आयु निर्धारित होती है। एच आई वी का भी अन्त होना है, परन्तु अभी यह नहीं कहा जा सकता कि 'कब' ? हाल की रिपोर्ट्स से इसमें अब समाप्ति की दिशा में बदलाव के संकेत मिलते हैं इसलिए हम लोगों के लिए एच आई वी का तात्पर्य एक भीषण तबाही है जो डरावा के रूप में आया, अपने को एक जोखिम के रूप में स्थापित किया और एक बुराई के रूप में चुनौती प्रस्तुत किया। परन्तु प्रत्येक बुराई का अन्त होना निश्चित है और वह दिन शीघ्र आए, उस दिशा में प्रयास जारी हैं।

आशाएं

एच आई वी संक्रमित प्रथम व्यक्ति की पहचान होने के तीन से अधिक दशकों के पश्चात हाल के दिनों में एक महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। फिर भी, वर्ष 2016 में 18 लाख लोगों का एच आई वी संक्रमित होना यह इंगित करता है कि इसके संचरण को रोकने के लिए नवीन और बेहतर तरीकों को अपनाने की तत्काल आवश्यकता है। इस चुनौती का सामना करने के लिए सरकारी और गैर–सरकारी एजेंसियों की सक्रिय भागीदारी में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न मंच कार्यरत हैं। एच आई वी ग्रस्त रोगियों की देख–भाल करने और उनके चिकित्सा–प्रबंध के लिए भारी मात्रा में आर्थिक व्यवस्था की गई। इस समस्या से निपटने के लिए पर्याप्त शोध प्रयास भी किए गए। वर्ष 2015 में वैश्विक नेतृत्व में सतत विकास लक्ष्य *(सस्टेनएबल डेवलपमेंट गोल्स)* निर्धारित किए गए। जिसका उद्देश्य वर्ष 2030 तक व्यापक स्वास्थ्य कवरेज *(यूनिवर्शल हेल्थ कवरेज)* निर्धारित किया गया। अब व्यापक स्वास्थ्य कवरेज के ढांचे को सभी स्वास्थ्य कार्यक्रमों में सम्मिलित कर लिया गया है। अब सम्पूर्ण विश्व एच आई वी के विरुद्ध युद्ध स्तर पर जुट गया है और सभी प्रकार की सहायता प्राप्त हो रही है। वर्ष 2017 के लिए विश्व एड्स दिवस अभियान के लिए निर्धारित विषय "स्वास्थ्य के प्रति अधिकार" के अनुरूप विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एच आई वी संक्रमित सभी 36.7 मिलियन लोगों और इस महामारी से प्रभावित एवं इसके प्रति अतिसंवेदनशील व्यक्तियों की आवश्यकताओं को महत्वपूर्ण बताया है। "प्रत्येक व्यक्ति मायने रखता है" नारे के अन्तर्गत विश्व स्वास्थ्य संगठन जरूरतमंद सभी व्यक्तियों के लिए सुरक्षित, प्रभावी, उच्च कोटि की किफायती दवाइयों के साथ–साथ नैदानिक सुविधाएं तथा स्वास्थ्य सुरक्षा सेवाएं उपलब्ध कराने का समर्थन करता है, इसके साथ–साथ यह भी सुनिश्चित करता है कि ऐसे सभी लोगों हेतु आर्थिक जोखिमों से सुरक्षा का प्रबंध हो।

इलाज कारगर साबित हो रहा

चुनौतीपूर्ण एच आई वी से निपटने की दिशा में किए गए प्रयासों के कुछ फल मिलने लग गए हैं। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (एन ए सी ओ) के अनुसार भारत में एच आई वी के नए संक्रमणों में वर्ष 2000 से 66 प्रतिशत और वर्ष 2007 से 32 प्रतिशत की गिरावट देखी गई है। अधिकांश रोगियों में चिकित्सा के सफल परिणाम मिले हैं। एक अध्ययन में विसंगत दम्पतियों में प्रारंभिक अवस्था में ही रोधी उपचार (ए आर टी) की शुरुआत किए जाने से उनमें एच आई वी संक्रमण रोका गया है। इस अध्ययन में देखा गया है कि एच आई वी की उपस्थिति वाले ऐसे व्यक्ति जिसमें विषाणुओं की संख्या इतनी कम हो कि उसकी पहचान नहीं की जा सके, उसके द्वारा विषाणु संचरण का खतरा बहुत कम, संभवतः बिल्कुल नहीं होता। आई सी एम आर का पुणे स्थित राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान भी इस बहुकेन्द्रीय परीक्षण का एक हिस्सा था। रेट्रोवाइरलरोधी चिकित्सा की शुरुआत करने के लिए 350 कोशिका/घनमीटर का दिशानिर्देश निर्धारित किया गया था। इस अध्ययन से राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन को ए आर टी की शुरुआत करने के लिए विषाणुज स्तर 300 से 500 कोशिका/घनमीटर के रूप में बदलने में सहायता मिली है। इससे एच आई वी संक्रमित व्यक्तियों को रेट्रोवाइरल रोधी दवाइयों के साथ इलाज कब शुरू किया जाए, उस पर और चर्चा की जाने लगी। गहन विचार–विमर्श के परिणामस्वरूप भारत में 28 अप्रैल, 2017 को एक नई एच आई वी नीति की शुरुआत की गई जिसे ''एच आई वी के लिए परीक्षण और चिकित्सा नीति *(टेस्ट ऐण्ड ट्रीट)* ''का नाम दिया गया। जैसे ही कोई व्यक्ति परीक्षण के उपरांत एच आई वी संक्रमित पाया जाता है, उसे रेट्रोवाइरल रोधी चिकित्सा प्रदान की जाएगी, भले ही उसकी चिकित्सीय अवस्था अथवा उसमें सी डी कोशिकाओं की संख्या कुछ भी हो। इससे संक्रमित व्यक्ति की उत्तरजीविता और जीवन की गुणवत्ता बढ़ जाएगी, उसके द्वारा किसी नए व्यक्ति के संक्रमित होने को बचाया जा सकेगा। इसके अलावा संक्रमित व्यक्ति को क्षयरोग (टी बी) जैसे कई अवसरवादी संक्रमणों से भी बचाया जा सकेगा। अभी तक केवल उसी व्यक्ति में विषाणुओं की संख्या की जांच की सिफारिश की जाती है जिसमें प्रथम लाइन की चिकित्सा के कोई परिणाम नहीं मिले हों। परन्तु भारत सरकार ने यह निर्णय लिया है कि वर्ष 2018 से एच आई वी की उपस्थिति वाले सभी रोगियों का वर्ष में एक बार परीक्षण किया जाएगा। इससे इलाज करने वाले चिकित्सकों को इलाज प्रक्रिया पर निर्णय लेने और जारी चिकित्सा से मिलने वाले परिणाम पर नजर रखने में मदद मिलेगी।

नई दवाइयों के संदर्भ में कुछ प्रगति दिखाई देती है। कोबाटेगरावीर नामक एक इंजेक्शन जुड़ गया है। यह इंजेक्शन अंतःत्वचीय अथवा अन्तःपेशीय मार्ग से दिया जा सकता है। इस मुखीय विधि से प्रयोग किए जाने पर इस औषधि की हॉफ लाइफ (किसी जीवित शरीर, ऊतक या अंग का उसके द्वारा ग्रहण पदार्थ की आधी मात्रा को चयापचयित करने अथवा उसे निष्क्रिय करने में लगने वाला समय) 40 घंटे तक होती है, जबकि आंत्रेतर (पैरेंटेरल) मार्ग से प्रयोग किए जाने पर यह अवधि 21 से 50 दिनों तक होती है। एच आई वी के निवारण और उसकी चिकित्सा के लिए इस औषधि का अभी भी परीक्षण किया जा रहा है। इंजेक्शन द्वारा प्रयुक्त दीर्घ अवधि तक क्रियाशील इस औषधि से इसके दैनिक सेवन से बचा जा सकेगा और पेशेवर यौनाचार में लिप्त महिलाओं एवं पुरुषों से यौन संबंध स्थापित करने वाले पुरुषों जैसे उच्च खतरे की संभावना वाले वर्गों में संक्रमित होने से पूर्व रोगरोधक चिकित्सा के अनुपालन संबंधी समस्याओं से भी निपटा जा सकेगा। टेनाफोविर एलाफेनामाइड, जो टेनोफोविर का एक रूपान्तरित रूप है, नामक औषधि की बेहतर प्रभावकारिता देखी गई है और अस्थि एवं वृक्क पर बहुत कम इतर प्रभाव देखने को मिले हैं। टेनोफोविर एक महत्वपूर्ण औषधि है और तिहरे NRTI आधारित विधानों का एक महत्वपूर्ण आधार है। टेनोफोविर एलाफेनामाइड आधारित निर्धारित खुराक युक्त संयोजनों, जिनमें एलवाइटेग्रावीर, कोबीसिस्टैट और एमट्रीसीटाबाइन रिलपाइवेरीन सम्मिलित है, को अप्रैल 2016 में मंजूरी प्राप्त हो गई। अभी दो संयोजनों की तृतीय प्रावस्था के चिकित्सीय परीक्षण किए जा रहे हैं। कोबीसिस्टैट में किसी प्रकार रेट्रोवाइरल रोधी क्रियाशीलता नहीं होती, परन्तु इसे मुख्यतया एटाज़ानावीर/डारुनावीर जैसे अन्य रेट्रोवाइरल रोधी दवाइयों के साथ प्रयोग किया जाता है। यह औषधि अन्य औषधियों के चयापचय को मन्द कर देती है इसलिए यह औषधि कम खुराक में प्रयोग की जाती है। योगवाही प्रभाव युक्त यह औषध संयोजन शरीर में लम्बी अवधि तक मौजूद रहता है, इसलिए इसे दिन में एक बार प्रयोग की जानी चाहिए, और उसके इतर प्रभाव भी कम होंगे।

वर्ष 2030 तक एच आई वी पर काबू पाने तथा एड्स की महामारी को समाप्त करने के उद्देश्य से वर्ष 2020 तक 90 : 90 : 90 का लक्ष्य निर्धारित कया गया है, जिसका आशय है – एच आई वी की उपस्थिति सहित 90 प्रतिशत लोगों का निदान करना, निदान किए गए 90 प्रतिशत लोगों को चिकित्सा प्रदान करना तथा 90 प्रतिशत लोगों का इलाज करके उनके विषाणु का शमन करना। संयुक्त राष्ट्र के उच्चस्तरीय बैठक में सभी राष्ट्रीय सरकारों ने एड्स के अंत को अब वैश्विक एच आई वी प्रतिक्रिया के लिए रूपरेखा तैयार करने में शामिल करने का समर्थन किया है।

निवारण (बचाव) महत्वपूर्ण है

हम सभी जानते हैं कि वर्तमान में इस संक्रमण को रोकने से भविष्य में एच आई वी संक्रमण से जुड़ी अनेक स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने के लिए किए जाने वाले व्यय को रोका जा सकेगा। एच आई वी संक्रमणों को रोकने के लिए विश्व भर का वैज्ञानिक समुदाय एच आई वी के विरुद्ध एक वैक्सीन विकसित करने की दिशा में प्रयासरत है। *इंटरनेशनल एड्स वैक्सीन इनीशिएटिव* अर्थात आई ए आई (अंतर्राष्ट्रीय एड्स वैक्सीन पहल) जो लाभ नहीं कमाने वाली एक विश्वस्तरीय एजेंसी है, द्वारा विश्व भर में एच आई वी के विरुद्ध 50 से अधिक वैक्सीनों का विभिन्न प्रावस्थाओं

में परीक्षण किया जा रहा है। इसी दौरान, यौन संबंध स्थापित करने के दौरान माइक्रोबीसाइड जेल के प्रयोग के साथ इन विषाणुओं को फैलने में कमी लाने पर भी शोध कार्य केन्द्रित है। यौन संबंध स्थापित करने के दौरान इन विषाणुओं से प्रभावित होने का अत्यधिक खतरा होता है। अभी तक, विषाणुओं के प्रवेश को रोकने वाले कुछ चिकित्सीय उपायों से आशाजनक सुरक्षा प्राप्त हुई है। हाल ही में *यूरोपियन कम्बाइंड हाइली एक्टिव एंटी–रेट्रोवाइरल माइक्रोबीसाइड्स* (CHAARM) *कंशोर्शियम* की रिपोर्ट में प्रयोगशाला में लघु पेप्टाइड्स के साथ सम्पन्न प्रयोग से विषाणु का बंधन हो जाता है और वह शरीर की कोशिकाओं में प्रवेश करने और उन्हें संक्रमित करने से रोकता है। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार यदि प्रारंभिक अवस्था में इलाज किया जाए और उपयुक्त निवारक उपाय अपनाए जाएं तो यौन संबंध स्थापित करने वाले दूसरे व्यक्ति को संक्रमित होने से बचाया जा सकता है। HP TN 052 परीक्षण से प्राप्त इस रिपोर्ट से संक्रमित व्यक्तियों में उत्तम स्वास्थ्य को बनाए रखने और उन्हें अपने साथियों को संक्रमित करने से बचाने का एक संभावित विकल्प प्राप्त हुआ है।

अब यह स्पष्ट हो गया है कि एच आई वी संक्रमित व्यक्तियों को स्वस्थ बनाए रखने तथा एच आई वी संक्रमण की चपेट में आने वाले नए रोगियों की संख्या घटाने के लिए इससे प्रभावित व्यक्तियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उच्च कोटि की निवारण एवं चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह "निवारण के रूप में इलाज" की धारणा को समर्थन प्रदान करता है। संक्रमित होने से पहले रोगनिरोध करना रोगनिवारण के रूप में चिकित्सा का एक उदाहरण है। जो व्यक्ति एच आई वी संक्रमित नहीं हैं परन्तु उन्हें संक्रमित होने का बहुत अधिक खतरा है, वे प्रतिदिन एक गोली (टैबलेट) का सेवन करके एच आई वी संक्रमण से बच सकते हैं। संक्रमण पूर्व रोगनिरोध के रूप में औषधि का नियमित सेवन करने के परिणामस्वरूप उच्च खतरे की संभावना वाले व्यक्तियों में एच आई वी संक्रमण के खतरे में 92 प्रतिशत तक की गिरावट प्रदर्शित की गई है। संक्रमण पूर्व रोगनिरोध एच आई वी निवारण का एक सशक्त साधन है और उसे कण्डोम एवं अन्य निवारण विधियों के साथ प्रयोग किया जा सकता है, जिससे अपेक्षाकृत बहुत अधिक सुरक्षा प्राप्त हो सकेगी। विभिन्न स्तरों पर प्रदान की जाने वाली अन्य निवारण सेवाओं में सम्मिलित हैं : उच्च खतरे वाले वर्गों में लक्षित इंटरवेंशन कार्यक्रम, नीडिल–सुई के आदान–प्रदान से संबंधित कार्यक्रम, यौन संचारित संक्रमणों का निवारण और नियंत्रण, एच आई वी की जांच और परामर्शक सेवा, कण्डोम प्रयोग को बढ़ावा देना, संक्रमित माता–पिता से उनकी संतान को संक्रमित होने से बचाने से संबंधित कार्यक्रम, सूचना एवं शिक्षा, आदि।

इलाज संभावित है

हाल के दिनों में एच आई वी रोग के इलाज पर केन्द्रित शोध कार्यों से आशातीत परिणाम मिले हैं। टिमोथी रे ब्राउन नामक व्यक्ति एच आई वी से रोगमुक्त होने वाला प्रथम व्यक्ति माना जाता है, जिसका पूर्ण उपचार हम लोगों के लिए आशाजनक प्रतीत हुआ है। उसे पांच वर्ष पूर्व अस्थि मज्जा (बोन मैरो) का प्रतिरोपण किया गया था और वह अभी भी विषाणु मुक्त है। हाल ही में ऐसे दो और मामले प्रकाश में आए हैं और वे अस्थि मज्जा प्रतिरोपण के दो वर्ष पश्चात अभी भी पूर्णतया संक्रमण मुक्त हैं। इससे शोधकर्ताओं को एच आई वी के पूर्ण इलाज के विषय में सोचने और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक आसान मार्ग का पता लगाने का अवसर प्राप्त हुआ है। गुप्त विषाणु को प्रेरित करने के लिए *शॉक ऐण्ड किल* उपचार और ऐसे रोगियों के औषधियों से उपचारित करने जैसी नीतियों पर प्रभावी अध्ययन किए जा रहे हैं। एक बार विषाणु गुप्त (अप्रकट) अवस्था के रिजर्वायर से बाहर आ जाएं तो उपलब्ध दवाइयों से उन्हें आसानी से नष्ट किया जा सकता है।

सारांश

एड्स के क्षेत्र में सहायता के लिए संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति की आपातकालीन योजना द्वारा उपर्युक्त लक्ष्य के लिए निर्धारित किया गया विषय था – *''पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और भागीदारी के माध्यम से प्रभाव को बढ़ाना''*। इस लक्ष्य को सहायता प्रदान करने के लिए सितम्बर, 2017 में संयुक्त राज्य अमरीका के *सेक्रेटरी ऑफ स्टेट* ने एच आई वी/एड्स महामारी नियंत्रण कार्यक्रम को तीव्र करने के लिए **पी ई पी एफ ए आर** नीति की शुरुआत की थी। इस नीति से पुनः पुष्टि होती है कि संयुक्त राज्य अमरीका सरकार 50 से अधिक देशों में एच आई वी/एड्स की महामारी पर काबू पाने की दिशा में प्रयासों को निरन्तर सहयोग प्रदान करेगी, अनाथ और अति संवेदनशील बच्चों को सेवाएं प्रदान करेंगी, अति संवेदनशील एवं उच्च संभावित खतरे युक्त व्यक्तियों सहित सम्पूर्ण आबादी तक एच आई वी से संबंधित सेवाएं उपलब्ध कराएगी और एच आई वी की अधिकतम उपस्थिति वाले 13 देशों में प्रगति को बढ़ाएगी। जिससे वर्ष 2020 तक एच आई वी महामारी पर काबू पाने का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके। इस दिशा में यू एस एड नामक संस्था उन लोगों को आर्थिक सहयोग प्रदान कर रही जिन्हें एच आई वी संक्रमण की चपेट में आने का अत्यधिक खतरा है अथवा जिन्हें आवश्यकता हो। इस प्रकार एच आई वी की चपेट में आने की आशंका वाले लाखों नए रोगियों को संक्रमित होने से बचाया जा सकेगा और लाखों लोगों को मौत से बचाया जा सकेगा। केवल अमरीकी एजेंसियां ही नहीं बल्कि भारत सहित अन्य देशों में निजी क्षेत्र, लोकोपकारी संगठन, बहुपार्श्वीय संस्थान, नागरिक समाज और धार्मिक संगठन, एच आई वी संक्रमित व्यक्ति तथा इस कार्य से जुड़े कई अन्य एक उत्तरदायी भागीदारी निभाने एवं इससे जुड़ी सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए एकजुट हो रहे हैं।

जैसा कि शुरुआत में व्यक्त है कि प्रत्येक उद्भव का अन्त निश्चित होता है, यह समस्या भी आने वाले दिनों में निश्चित रूप से दूर होगी। मौजूदा संसाधनों का उपयुक्त प्रयोग, इस रोग से

बचने का प्रयास करना, संक्रमित व्यक्ति किसी अन्य को संक्रमित न कर सके, इसके लिए उसका इलाज करना एच आई वी पर काबू पाने के महत्वपूर्ण उपाय हैं। हमें एक ऐसे अग्निबाण की खोज जारी रखने की आवश्यकता है जो एच आई वी रूपी इस रावण में मौजूद अमृत को नष्ट कर दे। सहयोगी अध्ययनों, स्व परीक्षण, सामुदायिक परीक्षण, वैक्सीन शोध, नई औषधियों के परीक्षण, आदि से उत्साहजनक रिपोर्ट्स प्राप्त हो रही हैं। प्राप्त संकेतों से प्रतीत होता है कि अब हम एड्स की समाप्ति के विषय में बात कर सकते हैं। जरूरत इस बात की है कि हमारे प्रयास पारदर्शी हों, हम समाज से क्या ले रहे और क्या दे रहे हैं, इसके प्रति स्वयं को उत्तरदायी बनाएं तथा स्थानीय एवं वैश्विक स्तर पर ठोस भागीदारी विकसित करें जिससे एच आई वी की समाप्ति की दिशा में आने वाली कठिनाइयों का सामना कर सकें।

यह आलेख पुणे स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' डॉ विजय नेमा से प्राप्त हुआ है।

आई सी एम आर–राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान, पुणे में विश्व एड्स दिवस का आयोजन

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के पुणे स्थित आई सी एम आर राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान में दिनांक 1 दिसम्बंर, 2017 को विश्व एड्स दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ओपेन हाउस, सामूहिक चर्चा, नुक्कड़ नाटक, सी एम ई (शतत मेडिकल शिक्षा कार्यक्रम) और ऑडियो–विज़ुअल प्रदर्शन जैसे विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए।

डॉ रमन आर. गंगाखेडकर का सम्बोधन

राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान कैम्पस में पोस्टर्स और मॉडेल्स के साथ आयोजित एक ओपेन हाउस कार्यक्रम में पुणे म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन और चिंचवाड म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के अंतर्गत विभिन्न–स्कूलों के छात्र–छात्राओं को आमंत्रित किया गया। संस्थान के वैज्ञानिकों ने आगन्तुक शिक्षकों और विद्यार्थियों को विज्ञान के प्रति प्रेरित होने के उद्देश्य से प्रयोगशाला तकनीकों पर जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर कुल 750 विद्यार्थियों ने एच आई वी और एड्स के विकसित होने, उस पर काबू पाने के तरीकों एवं इलाज से संबंधित जानकारी प्राप्त की।

सामूहिक–चर्चा कार्यक्रम के अंतर्गत संस्थान के वैज्ञानिकों के दो दलों ने उपस्थित विद्यार्थियों के साथ चर्चा की जिन्हें एच आई वी के संचरण की विधियों, रेट्रोवाइरल रोधी चिकित्सा,

सभागार का दृश्य

विद्यार्थीगण

एच आई वी/एड्स में वर्तमान शोध कार्यो एवं राष्ट्रीय दिशानिर्देश जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी प्रदान की गई। प्रथल दल में वैज्ञानिक 'डी' द्वय डॉ अश्विनी साठे, डॉ सुचित काम्बले, और श्री सचिन जाधव सम्मिलित थे, जबकि द्वितीय दल में डॉ आरती माने, वैज्ञानिक 'डी', डॉ अमृता राव, वैज्ञानिक 'सी' और डॉ अभिजीत कदम, वैज्ञानिक 'बी' सम्मिलित थे। इस कार्यक्रम में

दोनों दलों के वैज्ञानिकों ने उपस्थित विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दिया और उनकी शंकाओं का समाधान किया।

संस्थान के वैज्ञानिक 'बी' डॉ मेघा मामुलवार के संचालन में कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए एक नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता आयोजित की गई। पुणे स्थित 5 कॉलेजों के विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। इनमें सम्मिलित थे *टेहमी ग्रांट इंस्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग एजुकेशन, साधू वासवानी नर्सिंग* कॉलेज, श्रीमती सुभद्रा के. नर्सिंग कॉलेज, एम आई एम ई आर मेडिकल कॉलेज, तथा डॉ डी. वाई. पाटिल नर्सिंग कॉलेज।

इस प्रतियोगिता में साधू वासवानी नर्सिंग कॉलेज के विद्यार्थियों ने प्रथम, श्रीमती सुभद्रा के जिन्दल नर्सिंग कॉलेज ने द्वितीय और डॉ डी. वाई. पाटिल नर्सिंग कॉलेज के विद्यार्थियों ने तृतीय स्थान प्राप्त किए। इस नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता में इस संस्थान की वैज्ञानिक 'एफ' द्वय डॉ सीमा सहाय और डॉ स्मिता कुलकर्णी ने निर्णायकों की भूमिका निभाई।

एक अन्य कार्यक्रम 'ओपेन कैनवस अभियान' के अन्तर्गत कुल 76 छात्र–छात्राओं ने आकर्षक, सूचनाप्रद और प्रेरक स्लोगन लिखे। इस संस्थान के सभागार में ऑडियो–विजुअल के माध्यम से एच आई वी संचरण, उपचार, और चिकुनगुनिया एवं डेंगी की रोकथाम विधियों पर जानकारी प्रदान की गई।

इस अवसर पर संस्थान में दिनांक 7 दिसम्बर, 2017 को निजी चिकित्सकों के लिए अवसरवादी संक्रमण के निदान और उपचार तथा रेट्रोवाइरल रोधी चिकित्सा की ताजा स्थिति पर सतत मेडिकल शिक्षा (सी एम ई) कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संस्थान के प्रभारी निदेशक डॉ रमन आर. गंगाखेडकर के मार्गदर्शन में आयोजित उपर्युक्त कार्यक्रमों के अलावा दिनांक 13 से 15 दिसम्बर, 2017 के दौरान स्थित विभिन्न कारखानों और कम्पनियों में कार्यरत कर्मचारियों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए।

इस प्रकार राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान के प्रभारी निदेशक डॉ रमन आर. गंगाखेडकर के कुशल मार्गदर्शन में विश्व एड्स दिवस के अवसर पर अनेक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए।

कोलकाता में आयोजित 'राष्ट्रीय प्रदर्शनी' में आई सी एम आर की भागीदारी

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने दिनांक 14–18 दिसम्बर, 2017 के दौरान सोनारपुर, कोलकाता में बंगीय सेवा समिति, कोलकाता द्वारा आयोजित ''13वां जातीय संहति उत्सव–एवं–भारत मेला –2017'' में भाग लिया। आई सी एम आर

माननीय विधायक श्री चिरंजीत चक्रवर्ती आई सी एम आर पैवीलियन में

मुख्यालय के साथ–साथ आई सी एम आर के कोलकाता स्थित दो संस्थानों यथा राष्ट्रीय हैजा तथा आंत्ररोग संस्थान एवं क्षेत्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य अनुसंधान केन्द्र (पूर्व), (जो अहमदाबाद स्थित राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान का क्षेत्रीय केन्द्र है) ने इस प्रदर्शनी में हिस्सा लिया। इस प्रदर्शनी का उद्‌घाटन दिनांक 14 दिसम्बर, 2017 को स्थानीय विधायक माननीय श्री चिरंजीत चक्रवर्ती ने किया। श्री चक्रवर्ती आई सी एम आर पैवीलियन में पधारे जहां आई सी एम आर मुख्यालय में वैज्ञानिक 'एफ' डॉ के. एन. पाण्डेय

माननीय सांसद श्रीमती शताब्दी रॉय आई सी एम आर पैवीलियन में

ने उनका स्वागत करते हुए आई सी एम आर की शोध गतिविधियों और उपलब्धियों से अवगत कराया। दिनांक 15 दिसम्बर, 2017 को स्थानीय सांसद, लोकसभा, माननीय श्रीमती शताब्दी रॉय ने आई सी एम आर पैवीलियन का दौरा किया। प्रदर्शनी के समापन दिवस अर्थात 18 दिसम्बर, 2017 को स्थानीय सांसद, लोक सभा माननीया श्रीमती संध्या रॉय ने आई सी एम आर पैवीलियन का दौरा किया, जहां आई सी एम आर मुख्यालय के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ के. के. गांगुली ने उनका स्वागत करते हुए उन्हें आई सी एम आर की शोध गतिविधियों एवं उपलब्धियों से अवगत कराया। इस प्रदर्शनी में राष्ट्रीय हैजा तथा आंत्ररोग संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ हेमन्त कोले, वैज्ञानिक 'डी' डॉ अभिक सिन्हा एवं क्षेत्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्र के वैज्ञानिक 'डी' डॉ डी. बिस्वास,

वैज्ञानिक 'बी' डॉ पवन कुमार मौर्य, एवं अन्य वैज्ञानिकगण एवं तकनीकी अधिकारियों ने भाग लिया और पैवीलियन में पधारे दर्शकों को स्वास्थ्य के विभिन्न विषयों पर जानकारी प्रदान की। क्षेत्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्र (आर ओ एच सी) के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों ने विभिन्न उपकरणों के माध्यम से ध्वनि प्रदूषण के स्तर, पर्यावरण में धूल कणों के स्तर एवं कार्यस्थल पर तापमान से उत्पन्न तनाव के स्तर के मापन का प्रदर्शन किया। इस पांच दिवसीय प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में जन सामान्य, विद्यार्थीगण

डॉ के.के. गांगुली स्मृति चिन्ह प्राप्त करते हुए

पैवीलियन में पधारे विद्यार्थीगण

विद्यार्थीगण

दर्शकगण

दर्शकगण

दर्शकगण

आई सी एम आर पैवीलियन में पधारे। माननीय सांसद श्रीमती रॉय की अध्यक्षता में सम्पन्न समापन समारोह में प्रदर्शनी में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण–पत्र वितरित किए गए। आई सी एम आर की ओर से डॉ गांगुली ने स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण–पत्र प्राप्त किए।

आई सी एम आर–राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान, पुणे में विविध कार्यक्रमों का आयोजन

कौमी एकता सप्ताह

आई सी एम आर के पुणे स्थित आई सी एम आर राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान में दिनांक 19–25 नवम्बर, 2017 के दौरान 'कौमी एकता सप्ताह' का आयोजन किया गया। संस्थान के अनुभाग अधिकारी श्री बी. के. वडके, सहायक श्री विनोद चव्हाण एवं अन्य स्टॉफ ने 'समस्त मानव जाति के सभी वर्गों के मध्य शांति एवं सद्भाव तथा सूझबूझ' कायम करने के लिए विघटनकारी शक्तियों से लड़ने के लिए प्रतिज्ञा ली।

सशस्त्र सेना दिवस

आई सी एम आर राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान द्वारा दिनांक 24 नवम्बर, 2017 को 'सशस्त्र सेना दिवस' के अवसर पर झण्डा दिवस का आयोजन किया गया। संस्थान के समस्त स्टॉफ ने इस अवसर पर झण्डा दिवस निधि कोष हेतु ऐच्छिक रूप से आर्थिक अनुदान देकर बढ़चढ़ कर भाग लिया।

संविधान दिवस

राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान, पुणे एवं संस्थान की यूनिट्स में दिनांक 27 नवम्बर, 2017 को 'संविधान दिवस' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के प्रांगण में ''संविधान की प्रस्तावना/उद्देशिका'' का सामूहिक पठन किया गया। अनुभाग अधिकारी श्री बी. के. वडके के संचालन में इस कार्यक्रम में संस्थान का समस्त स्टॉफ सम्मिलित हुआ।

पुणे के पाषाण स्थित संस्थान में वरिष्ठ तकनीशियन श्री एम. बी. कदम द्वारा और संस्थान की केरल यूनिट के साथ–साथ संस्थान की बेंगलुरु यूनिट में भी ''संविधान दिवस'' का आयोजन किया गया।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के विभिन्न तकनीकी दलों/तकनीकी समितियों की नई दिल्ली में सम्पन्न बैठकें:

नवजात में जन्मजात दोष की जांच और मृत जन्म की निगरानी पर ICMR-NIRRH द्वारा प्रस्तुत परियोजना की समीक्षा हेतु विशेषज्ञ दल की बैठक	4 दिसम्बर, 2017
बाल एच आई वी अध्ययन पर परियोजना सलाहकार दल की बैठक	5 दिसम्बर, 2017
प्रोटोकॉल्स की समीक्षा हेतु चिकित्साविज्ञान पर विशेषज्ञ समिति की बैठक	5 दिसम्बर, 2017
मस्तिष्कावरणशोथ (मेनिंजाइटिस) पर विशेषज्ञ दल की बैठक	6 दिसम्बर, 2017
टी बी वैक्सीन परीक्षण के अन्तर्गत प्रतिरक्षाविज्ञानी अध्ययनों पर बैठक	7 दिसम्बर, 2017
''डाटा मैनेजमेंट प्लान'' पर बैठक	7 दिसम्बर, 2017
मीज़, रुबेला (एम आर) सीरम सर्वेक्षणों हेतु प्रयोगशाला परीक्षण और डाटा प्रबंधन पर चर्चा करने हेतु विशेषज्ञ दल की बैठक	11 दिसम्बर, 2017
पूर्वोत्तर भारत में विषाणुज यकृतशोथ की उपस्थिति के मूल्यांकन पर बहुकेन्द्रीय टास्क फोर्स परियोजना के लिए सलाहकार दल की बैठक	12 एवं 19 दिसम्बर, 2017

भारत . यू एस VAP (वैक्सीन एक्शन प्रोग्राम) पर विशेषज्ञ दल की बैठक	15 दिसम्बर, 2017
एच आई वी/एड्स एवं माइक्रोबीसाइड्स पर आई सी एम आर . डी बी टी विशेषज्ञ दल की बैठक	15 दिसम्बर, 2017
वृद्धवर्ग की आबादी में हृद्वाहिकीय खतरे के मूल्यांकन हेतु ड्राइड ब्लड स्पॉट में बायोमार्कर्स के आकलन पर विशेषज्ञ दल की बैठक	15 दिसम्बर, 2017
आंध्र प्रदेश, भारत में अज्ञात हेतुकी के चिरकारी वृक्क रोग के लोगीट्युडिनस अध्ययन पर बैठक	28 दिसम्बर, 2017

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों की भागीदारी

चेन्नई स्थित राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक 'ई' डॉ ल्यूक एलिजाबेथ हन्ता ने सिडनी विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया में ''औषध प्रतिरोधी क्षयरोग और एच आई वी के मेटाजीनोमिक्स निर्देशित प्रबंधन नैदानिकी में प्रगति'' शीर्षक से आयोजित फेलोशिप प्रशिक्षण प्राप्त किया (19 नवम्बर से 2 दिसम्बर, 2017)।

हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'जी' डॉ ए. लक्ष्मैया, वैज्ञानिक 'डी' डॉ एम. एस. राधिका तथा वैज्ञानिक 'बी' डॉ बी. नवीन कुमार ने तथा नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ दामोदर साहू और डॉ सरिता नायर ने अटलांटा, जॉर्जिया, संयुक्त राज्य अमरीका में संपन्न ''भारत के तीन जिलों में एक बृहत स्वास्थ्य और पोषण सर्वेक्षण हेतु गहन समीक्षा करने के लिए कार्यशाला'' में भाग लिया (3–13 दिसम्बर, 2017)।

पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ अतानु बसु ने जेनेवा, स्विट्जरलैण्ड में सम्पन्न ''जैविक हथियार सभा की 8वीं स्टेट पार्टी बैठक'' में भाग लिया (4–8 दिसम्बर, 2017)।

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' डॉ एलेक्स इयापेन ने बैंकॉक, थाइलैण्ड में सम्पन्न वार्षिक संयुक्त अंतर्राष्ट्रीय ट्रॉपिकल मेडिसिन की बैठक में भाग लिया (6–8 दिसम्बर, 2017)।

पुणे स्थित राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक 'डी' डॉ आरती माने ने थिम्पू, भूटान में सम्पन्न राष्ट्रीय यकृतशोथ प्रयोगशाला परीक्षण नीतियों की समीक्षा एवं ड्राफ्टिंग के लिए एक बाह्य विशेषज्ञ परामर्शक के रूप में भाग लिया (6–16 दिसम्बर, 2017)।

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की निदेशक डॉ नीना वलेचा ने जेनेवा, स्विट्जरलैण्ड में ''मलेरिया रसायन चिकित्सा मलेरिया चिकित्सा के लिए दिशानिर्देश के तृतीय संस्करण को अपडेट करने पर तकनीकी परामर्शक बैठक के अंतर्गत विश्व स्वास्थ्य संगठन के तकनीकी विशेषज्ञ दल की बैठक में भाग लिया (11–13 दिसम्बर, 2017)।

नोएडा स्थित राष्ट्रीय कैंसर रोकथाम और अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ रवि मेहरोत्रा ने हेलसिंकी, फिनलैण्ड में सम्पन्न'' तम्बाकू निगरानी पर विशेषज्ञ दल की बैठक'' में भाग लिया (11–13 दिसम्बर, 2017)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय की वैज्ञानिक 'ई' डॉ कामिनी वालिया ने बैंकॉक, थाइलैण्ड में ''दक्षिण एशिया एक स्वास्थ्य रोग निगरानी नेटवर्क की स्थापना हेतु शासी संरचना और रोडमैप के विकास'' पर सम्पन्न बैठक में भाग लिया (11–13 दिसम्बर, 2017)।

पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ डी. टी. मौर्य ने लियॉन, फ्रांस में सम्पन्न ''उच्च संशोधन (बायोसेफ्टी लेवेल–4) प्रयोगशाला नेटवर्किंग, पर विश्व स्वास्थ्य संगठन की परामर्शक बैठक में भाग लिया (13–15 दिसम्बर, 2017)।

कोलकाता स्थित राष्ट्रीय हैजा तथा आंत्ररोग संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ सन्दीपन गांगुली ने टोक्यो, जापान में सम्पन्न ''आंत्रीय प्रोटाज़ोआ के विरुद्ध औषध की प्रभावकारिता'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया (13–15 दिसम्बर, 2017)।

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' डॉ रजनी कान्त दीक्षित ने बैंकॉक, थाईलैण्ड में सम्पन्न ''इंटीग्रेटिव बायोलॉजी पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' में भाग लिया (26–28 फरवरी, 2018)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वित्तीय सहायता में सम्पन्न एवं भावी संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन

विषय	दिनांक एवं स्थान	सम्पर्क के लिए पता
द्वितीय हिमाचल प्रदेश राज्य विज्ञान कांग्रेस : भारतीय हिमाचली क्षेत्र में सतत जीवन यापन हेतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी	20–21 नवम्बर, 2017 शिमला	डॉ कुणाल सत्यार्थी राज्य विज्ञान प्रौद्योगिकी एवं पर्यावरण परिषद (शिमला)
भारतीय निवारक एवं सामाजिक चिकित्सा संस्था – कर्नाटक राज्य चैप्टर का प्रथम वार्षिक सम्मेलन	21–22 दिसम्बर, 2017 मैसूर	डॉ सुनील कुमार डी. जे एस एस मेडिकल कॉलेज मैसूर
भारत में मेडिकल प्रौद्योगिकी का भविष्य मेडिकल युक्ति और नैदानिक उद्योग को आगे बढ़ाने पर सम्मेलन	22 दिसम्बर, 2017 नई दिल्ली	श्री अनुज माथुर ASSOCHAM नई दिल्ली
भारतीय पीडियाट्रिक्स अकादमी का राष्ट्रीय सम्मेलन "PEDICON 2018"	2–7 जनवरी, 2018 नागपुर	डॉ जयन्त उपाध्ये भारतीय पीडियाट्रिक्स अकादमी, उपाध्ये बाल चिकित्सालय नागपुर (महाराष्ट्र)
प्रमाण आधारित चिकित्साविज्ञान के सिद्धान्तों पर कार्यशाला	3 जनवरी, 2018 नागपुर	डॉ मीनू सिंह स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान चण्डीगढ़
मस्तिष्क कंम्यूटर इंटरफेस (BCI) : अनुप्रयोग और चुनौतियों पर सेमिनार	4–5 जनवरी, 2018 डिंडीगुल	डॉ एस. कार्तिगई लक्ष्मी एस एस एस इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी संस्थान डिंडीगुल (तमिलनाडु)
सार्वजनिक स्वास्थ्य सुरक्षा हेतु नवाचार संबंधी खाद्य एवं पोषण प्रौद्योगिकीयों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	4–5 जनवरी, 2018 सेलम	डॉ पी. नाज़नी पेरियार विश्वविद्यालय सेलम (तमिल नाडु)
संक्रामक रोग : जन स्वास्थ्य चुनौतियों पर सम्मेलन	6 जनवरी, 2018 विल्लूपुरम	श्री कृष्णामूर्ति ES नर्सिंग कॉलेज विल्लूपुरम (तमिल नाडु)

विषय	दिनांक एवं स्थान	सम्पर्क के लिए पता
नवीन औषध वितरण प्रणाली में चुनौतियां और अवसर पर संगोष्ठी	6 जनवरी, 2018 पालघर	श्रीमती मीता एन. जैन सेंट जॉन फार्मेसी एवं अनुसंधान संस्थान पालघर (महाराष्ट्र)
पोषणज अनुसंधान में ओमिक्स प्रौद्योगिकियों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	10–11 जनवरी, 2018 वेल्लोर	डॉ आर. दुर्गा दवी डी के एम महिला कॉलेज वेल्लोर (तमिल नाडु)
जीनोम एडिटिंग : साधन एवं अनुप्रयोग पर राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं – फैकल्टी विकास कार्यक्रम	15–20 जनवरी, 2018 दिल्ली	डॉ साधना भार्मा मिराण्डा हाउस दिल्ली विश्वविद्यालय (दिल्ली)
भावी जैव सामग्रियों और स्मार्ट मेडिकल युक्तियों के विकास में नवाचार एवं चुनौतियों पर सेमिनार	16–17 जनवरी, 2018 कोइम्बटूर	डॉ एल. फ्रैंसिस ज़ैवियर हिन्दुस्तान इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी कॉलेज कोइम्बटूर
मेडिकल अनुप्रयोगों हेतु गहन विद्या तकनीकों और साधनों पर सेमिनार	16–20 जनवरी, 2018 विरुधुनगर	डॉ के. माला मेप्को स्लेंक इंजीनियरिंग कॉलेज विरुधुनगर (तमिलनाडु)
सर्वाइकल कैंसर : इस घातक रोग पर काबू पाने की दिशा में एक तीव्र प्रयास पर राष्ट्रीय कांग्रेस	18 जनवरी, 2018 नई दिल्ली	श्री अनुज माथुर ASSOCHAM नई दिल्ली
"NABICON 2018" 26वां वार्षिक NABICON सम्मेलन 2018	18–21 जनवरी, 2018 गुवाहाटी	डॉ पोरेश बरुआ NABI गुवाहाटी मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल गुवाहाटी (असम)
मेडिकल संबंधी अनुप्रयोग हेतु सेंसर उपकरण के प्रौद्योगिकीय मूल्यांकन पर सेमिनार	19–20 जनवरी, 2018 पेरुन्दुरई	डॉ एम, मोहम्मद इमरान नन्दा इंजीनियरिंग कॉलेज पेरुन्दुराई (तमिल नाडु)
शल्यचिकित्सा में समकालीन व्यवहार : थोरैसिक सर्जरी 2018 पर संगोष्ठी	19–22 जनवरी, 2018 नई दिल्ली	डॉ हेमांगा के. भट्टाचार्जी अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली

विषय	दिनांक एवं स्थान	सम्पर्क के लिए पता
व्यावसायिक स्वास्थ्य खतरे और इनके समग्र प्रबंधन पर राष्ट्रीय सम्मेलन	20–21 जनवरी, 2018 नागपुर	डॉ शुनहोगी पिंगले राष्ट्रीय खदान श्रमिक स्वास्थ्य संस्थान वाडी नागपुर (महाराष्ट्र)
कैंसर रोग की चिकित्सा में नैनोटेक्नोलॉजी के प्रयोग पर सेमिनार	22–23 जनवरी, 2018 कड्डालोर	डॉ के. आनन्दवेलू एम आर के प्रौद्योगिकी संस्थान कड्डालोर (तमिल नाडु)
नर्सों के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा वितरण प्रणाली के रूपान्तरण पर कार्यशाला	24–25 जनवरी, 2018 रायपुर	सुश्री जया सोने कोलम्बिया नर्सिंग कॉलेज रायपुर (छत्तीसगढ़)
पारम्परिक ज्ञान, हर्बल दवाई और बौद्धिक सम्पदा अधिकार पर कार्यशाला	24–25 जनवरी, 2018 चिकबल्लापुरा	डॉ एम. सी. दुर्गाश्री श्री राजेश्वरी महिला मण्डली चिकबल्लापुरा (कर्नाटक)
नैनोटेक्नोलॉजी और नैनोमैटीरियल्स : जान लेवा रोगों की चिकित्सा में भावी दवाई पर कार्यशाला	24–25 जनवरी, 2018 तिरुनलवेली	डॉ ए. कृष्णावेणी शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज तिरुनलवेली (तमिल नाडु)
महिलाओं के स्वास्थ्य एवं स्वच्छता पर आयुर्वेदिक विज्ञान की भूमिका पर सम्मेलन	28–29 जनवरी, 2018 बालासोर	डॉ गोपाल कृष्ण कार बस्ती एरिया डेवलपमेंट काउंसिल बालासोर (ओडीशा)
जैवविविधता और बायोबैंकिंग पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (BIODIVERSE 2018)	28–29 जनवरी, 2018 गुवाहाटी	डॉ प्रियांक सुरमा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान गुवाहाटी (असम)
इंडियन एसोसिएशन ऑफ वेटेरिनरी माइक्रोबायोलोजिस्ट्स इम्यूनोलॉजिस्ट्स ऐण्ड स्पेशियलिस्ट्स इन इंफेक्शियस डिसीज़ेज की 31वीं वार्षिक सभा	29–31 जनवरी, 2018 तिरुपति	डॉ बी. श्री देवी कॉलेज ऑफ वेटेरिनरी साइंसेज़ श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय तिरुपति (आंन्ध्र प्रदेश)
मिडवाइव्स की आवाज़ – प्रजनन स्वास्थ्य के पुनः सशक्त बनाने पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	30–31 जनवरी, 2018 पुडुचेरी	श्रीमती एम. एनी. ऐनल कस्तूरबा गांधी नर्सिंग कॉलेज (पुडुचेरी)

आई सी एम आर पत्रिका की विषय सूची
वर्ष 31, 2017

	प्रमुख लेख	पृष्ठ सं.	माह
1	वाहनों से उत्पन्न प्रदूषण : एक ज्वलन्त स्वास्थ्य समस्या	1 से 12	जनवरी–फरवरी
2	अब समय है क्षयरोग को समाप्त करने का	13 से 20	मार्च
3	मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्राथमिक चिकित्सा	21 से 28	अप्रैल
4	राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान, चेन्नई का गौरवमयी इतिहास और उपलब्धियां – भाग 1	29 से 44	मई–जून
5	राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान, चेन्नईं का गौरवमयी इतिहास और उपलब्धियां – भाग 2	45 से 56	जुलाई
6	भारत में स्वास्थ्य और अनुसंधान की ताजा स्थिति	57 से 76	अगस्त
7	अवसाद : संवाद करना जरूरी	77 से 100	सितम्बर–अक्टूबर
8	डेंगी – तेजी से उभरती एक जन-स्वास्थ्य समस्या	101 से 120	नवम्बर
9	एच आई वी पर नियंत्रण–एक साझा प्रयास	121 से 132	दिसम्बर

आई सी एम आर के प्रकाशनों की सूची इसकी वेवसाइट www.icmr.nic.in पर उपलब्ध है। आई सी एम आर के प्रकाशन प्राप्त करने के लिए महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के नाम से बैंक ड्राफ्ट अथवा पोस्टल ऑर्डर भेजें। डाक व्यय अलग होगा। चेक अथवा मनीऑर्डर स्वीकार नहीं किए जाएंगे। इस संबंध में और अधिक जानकारी के लिए प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, पोस्ट बॉक्स 4911, अंसारी नगर, नई दिल्ली - 110029 से सम्पर्क करें।

दूरभाष : 91-11-26588895, 91-11-26588980, 91-11-26589794, 91-11-26589336, 91-11-26588707, (एक्स्टेंशन-228),

फैक्स -91-11-26588662 ई मेल : headquarters@icmr.org.in, icmrhqds@sansad.nic.in

सम्पर्क व्यक्ति : डॉ नीरज टण्डन, वैज्ञानिक 'जी' एवं

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना

आई सी एम आर पत्रिका भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

सेमिनार/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद द्वारा आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वित्तीय सहायता के लिए निर्धारित प्रपत्र पर पूर्णतया भरे हुए केवल उन्हीं आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा जो सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आदि के आरम्भ होने की तारीख से कम से कम दो महीने पूर्व भेजे जाएंगे।

सहयोग : श्रीमती वीना जुनेजा, श्रीमती सरिता नेगी

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स,
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87